RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

# हिन्दी ग्रामीण उपन्यास : परिवर्तित चेतना

**Dr. Rekha Mishra**

**Lecturer Hindi, Government College, Bibirani (Alwar), Rajasthan**

**ABSTRACT:**
ग्रामीण परिवेश हमारी मूल सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता को दर्शाने का मुख्य आधार है। इसीलिए महात्मा गांधीजी ने कहा था कि भारत गांव में बसता है । समय के साथ भारतीय ग्रामीण समाज के सामने कई तरह की चुनौतियां आई है और साथ ही ग्रामीण परिवेश में व्यापक परिवर्तन भी हुए हैं। जिसके कारण गांव का जीवन बहुत ही जटिल होता जा रहा है। बदलते परिवेश के संदर्भ में ग्रामीण जीवन की वैचारिक एवं भावनात्मक मानसिकता को ग्राम चेतना कहा जा सकता है। "परंपरा और नवीनता के प्रश्न को लेकर आलोचकों ने अतिवादी एकदेशीय उत्तर देने का प्रयास किया।..... नवीनता के आगमन से पूर्व परंपरागत व्यवस्थाओं का एक अचेतन संगठन अपने को दोहराते रहता है पर नवीनता की आगमन के साथ ही उक्त स्थिर संगठन में संशोधन की प्रक्रिया आरंभ होने लगती है। इस प्रक्रिया में नई और पुरानी व्यवस्थाएं परस्पर पूरक परिवर्तनों के पश्चात एक नितान्त व्यवस्था में रूपांतरित हो जाती हैं। इस प्रकार नवीनता का परंपरा से नाता जुड़ जाता है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि नवीनता के द्वारा परंपरागत तत्वों को स्वीकृत किया जाता है अपितु यह होता है कि सर्वप्रथम अपनी गत्यात्मकता के कारण प्रत्येक नवीनता पुरानी व्यवस्था के साथ विरोध करती है और तत्पश्चात अपने समेत संपूर्ण व्यवस्था में उचित बदलाव कर उसका अभिन्न हिस्सा बन जाती हैं। इसलिए परंपरा सुसंगति स्थापित करने के लिए नवीनता को पहले परंपरा से असंगत होना आवश्यक है।"

**Keywords:** उपन्यास, साहित्य, ग्रामीण चेतना, हिंदी, आधुनिकता एवं पारंपरिकता

शोध विस्तार: ग्रामीण चेतना की यह विशेषता कहीं जा सकती है कि इस चेतना में आधुनिकता एवं पारंपरिकता का अद्भुत संयोग है । समय के साथ ग्राम्य जीवन में नगरीय संस्कृति की भांति परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। भारतीय ग्राम सांस्कृतिक मूल्यों से गहरे तक जुड़ा हुआ है और अनेक बाह्य प्रभाव के उपरांत भी अपने सांस्कृतिक रूप से पूरी तरह से रंगा हुआ है। तीज त्योहारों का परंपरागत रूप आज के ग्रामीण जीवन की विशेषता है। ग्रामीण उपन्यासों में हिंदी उपन्यासकारों ने अपनी साहित्य रचना के माध्यम से ग्रामीण यथार्थ को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। बदलते सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक-सांस्कृतिक परिवेश ने जीवन मूल्यों और नैतिक प्रतिमानों को बदल डाला है। इस बदलते परिवेश के संदर्भ में "आधा गांव"के लेखक डा॰.राही मासूम रजा के अनुसार 'मैं जिस गांव और जिन लोगों की बातें कर रहा हूं, वह मेरा गांव और मेरे अपने लोग हैं और मैं उनसे प्यार करता हूं।..... मैंने पूरे गांव को नहीं चुना, बल्कि गांव के उस टुकड़े को चुना जिसे मैं अच्छी तरह से जानता हूं। कथाकार के लिए जरूरी है कि वह उन लोगों को अच्छी तरह जानता हो, जिनकी वह कहानी सुना रहा हो।'वैसे भी साहित्य का दायित्व है कि उस समाज के लोग जिस समय में जी रहे हैं वह समाज कैसा है ? इसका बोध करना ही है । "साहित्यकार इतिहास नहीं लिखता, इसलिए अतीत के चित्रण में उसे ठोस सत्यों का प्रदर्शन ही नहीं करना होता है, अपितु सामाजिक और वैयक्तिक अनुभूतियों का सहज भावेन प्रकटीकरण भी करना होता है। " किसी भी साहित्य में परिवेश का चित्र समाज के यथार्थ से जुड़ा हुआ होता है। कोई भी साहित्य तत्कालीन समाज की अवहेलना करके उस समाज के मूल्यों को आगे ले जाने वाला नहीं बन सकता। समाज के अनुभव ही साहित्यकार के लिए अनमोल होते हैं।

ग्रामीण परिवेश के संदर्भ में यदि हम बात करते हैं तो इसके यथार्थ की अभिव्यक्ति प्रेमचंद के उपन्यासों में हुई थी। प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन विशेषत: शोषित किसान मजदूर का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। डा॰.रामदरश मिश्र के अनुसार " वस्तुतः प्रेमचंद युग में प्रेमचंद के साथ-साथ उपन्यास साहित्य में जो सामान सापेक्षता आयी, वह उनकी सबसे बड़ी देन है।" प्रेमचंद के पश्चात ग्रामीण जीवन में आसपास के वातावरण में जिस प्रकार की जीवन की आकांक्षाएं- अपेक्षाएं और चेतना दृष्टिगत हुई है, उसका उपन्यासकारों ने यथार्थ रूप से अध्ययन करके उसे अभिव्यक्त किया है। ग्रामीण जन इस समय विभिन्न प्रकार के अंतर्द्वंदों से भी दो-चार हुआ है। उसकी अभिव्यक्ति भी ग्रामीण उपन्यासों में हुई है।

बढ़ते हुए औद्योगिकीकरण,संचार माध्यमों का प्रवेश, नगरों से सड़क संपर्क के माध्यम से जुड़ाव और रोजगार के लिए गांव के लोगों का पलायन आदि विभिन्न कारण रहे हैं जिनसे ग्रामीण जीवन में बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। वैसे भी इस भूमंडलीकरण के समय में जब समस्त विश्व सिमट कर एक विश्व ग्राम के रूप में आता जा रहा है तो फिर भारत के गांव भी इसके प्रभाव से अछूते कैसे रह सकते हैं स्वतंत्रता परवर्ती परिवर्तित परिवेशित चेतना से।

*2015, RHIMRJ, All Rights Reserved*  *ISSN:* 2349-7637 (Online)

कमलेश्वर ने स्वतंत्रता प्राप्ति का हमारे सामाजिक चेतना और साहित्य पर हुए प्रभाव को नई कहानी की भूमिका में इस प्रकार चित्रित किया है 'यह परिवर्तित परिवेश है भारतीय स्वतंत्रता का और परिप्रेक्ष्य है स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवन की त्वरित अथवा शिथिल परिवर्तित भारतीय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और साहित्यिक परिस्थितियाँ। निश्चय ही स्वतंत्रता हमारे देश और समाज के इतिहास की सबसे बड़ी घटना है इसने अपने यथार्थ से जिस तरह हमारे जीवन और उसके चेतना को, विश्वास और अविश्वास, आस्था और अनास्था, आशा और संशय के तत्वों से बनाया बिगड़ा,वह स्थिति हमारे सामने है। साहित्य स्वतंत्रता के पश्चात होने वाले परिवर्तनों से अछूता नहीं रह गया था। नये संविधान का निर्माण हुआ साथ ही देश का विभाजन भी हुआ तो जहां भारत की जनता नवीन सपनों को बुन रही थी वहीं बहुत से संघर्ष और उनकी पीड़ा वह भी जन मन में व्याप्त थी तथा उसी की अभिव्यक्ति ग्रामीण हिन्दी साहित्य में हुई।

भारतीय जीवन में बदलाव बहुत तेजी से हो रहा है। जीवन मूल्य टूटते जा रहे हैं, आदर्श के अर्थ बदल गए हैं और जीवन का जो कड़वा सच है, वह अपने नए रूप में हमारे सामने आ रहा है। परिवेशगत इन बदलावों को जैसे-जैसे परिवेश परिवर्तित हो रहा है वैसे-वैसे अनुभव जगत में भी बदलाव आ रहा है। साहित्य में अनुभूति की अभिव्यक्ति भी बदलते हुए परिवेश के साथ बदलती जा रही है । भारतीय जीवन में 'नवीनतम का ग्रहण और परंपरा को छोड़ना'यह प्रश्न जहां परिवेश को उद्वेलित कर रहा है उसी को साहित्यकार भी अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त कर रहे है। हिंदी के ग्रामीण उपन्यासों में देखें तो राजनीतिक क्षेत्र राजनीतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार भाई भतीजाबाद स्वार्थ जातिवाद जैसे रूप सामने आने लग गए और गांव की परिवर्तित राजनैतिक परिवेश के संबंध में 'माटी की महक' उपन्यास से 'यहां की मिट्टी में महक नहीं है चारों ओर बदबू है भारत के गांव जिनकी उपमा कभी स्वर्ग से दी जाती थी, आज नरक तुल्य बन चुके हैं। यहां के रहने वाले चंद मनुष्यों ने इनका सारा सौंदर्य लूट लिया है। शस्यश्यामला कहलाने वाली धरती गांव की गंदी राजनीति के दल-दल में फंसकर दम तोड़ रही है। इसकी गरिमा का अंत हो चुका है। गांव वालों में बचा हुआ है सिर्फ ईर्ष्या द्वेष,गरीबी आपसी वैमनस्यता …..और दुख से लबालब जीवन।' बदलते परिवेश में ग्रामीण सामाजिक जीवन भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। पुराने मूल्य और प्रतिमान बदल गए। भाषा विचार-व्यवहार,संस्कृति में बहुत सारी विविधताएं दृष्टिगत होने लगी। बढ़ती जनसंख्या, पाश्चात्य दृष्टिकोण, नगरीकरण, स्त्री पुरुषों के संबंधों की नई व्याख्या पीढियों की वैचारिक भिन्नता आदि सामाजिक जीवन में दृष्टिगत होने लगी। संयुक्त परिवार टूटने लग गए और परिवारों में अंतर्द्वंद और कटुताओं से लोगों के आपसी संबंध प्रभावित होने लग गए। साहित्य में इन परिस्थितियों के विषय में डा॰.रामदरश मिश्र ने लिखा है कि गांवों का स्वरूप भी बहुत कुछ बदल गया है। वहां के भी जीवन मानों में नए जीवन मानों का संक्रमण हो रहा है। परंपरा और प्रगति, अंधविश्वास और विज्ञान, स्वार्थ लिप्सा और सरलता का संघर्ष गांव की जीवन स्थिति को नई भंगिमा प्रदान कर रहा है।

गांवों का परिवेश शहरी भौतिकता वादी आधुनिक परिवेश से संक्रमित होता जा रहा है। ग्रामीण परिवेश दूसरी सस्कृतियों के सुसंस्कृत प्रभाव को तो देर से ग्रहण कर रहा है। किन्तु इन संस्कृतियों के दूषित प्रभाव शीघ्रता से ग्रामीण सस्कृति में प्रवेश करते जा रहे हैं। इससे गाँवों की सहजता कई बार बाहरी तौर पर ओढ़ी हुई सी प्रतीत होने लगती है। टूटते-बिखरते मूल्य का चित्र 'जल टूटा हुआ' उपन्यास में वास्तविक रूप में चित्रित हुआ है। जहां मूल्य की टूटन कई पात्रों को तोड़ रही है अथवा कई पात्र स्वयं मूल्यों को विघटित कर रहे हैं। श्री लाल शुक्ल के 'राग दरबारी' उपन्यास में व्यंगात्मक दृष्टिकोण से गांव में आई हुई विसंगतियों पर तीखा प्रहार किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास इदन्नम,चाक, अल्मा कबूतरी, कस्तूरी कुंडली बसे भी सामाजिक स्थितियों का नए दृष्टिकोण से विवेचन करते हैं । गाँव का वातावरण जितना सरल और स्वच्छ दीखता है, उतना होता नहीं। छोटी जगह पर छोटी छोटी बात ही तूफान उठाने को काफी होती है। बात-बात पर माया और ब्रह्म की दहाई एवं वाले ग्रामीण अपनी शान या भौतिक समृद्धि के लिए सहोदर भाई का गला काटने से नहीं हिचकिचाते। इसी प्रकार 'चाक' उपन्यास गाँव में आये सहजता में बदलाव को दर्शाता है-'आखिर घोखा दे गए न गाँव के लोग। तुम अब तो समझ गए होगे कि गाँव से सीधापन कब का उड़ गया। कई बार हम भी उनकी वेशभूषा देखकर उन्हें भोला समझ बैठते है, पता चलता है कि वे तो शातिर बदमाश।'

गाँवों में शहरी प्रभाव खान-पान और वेशभूषा तक में देखा जाने लगा है। गाँव में रहने वाली फुलिया बालों में सुगन्धित तेल लगाती है उसके रहन सहन पर शहरी तरीके का असर दिखाई देता है 'साड़ी पहनने का ढंग, बोलने बतियाने का ढंग, सब कुछ बदल गया है।….कान में पीतर के फूल हैं। फूल नहीं. फुलिया कहती है-कनपासा। आंचल में चाबी का गुच्छा बाँधती है, पैर में शीशी का रंग लगाती है।'

**निष्कर्ष:** गांव वर्तमान में ऐसी संक्रमण कालीन स्थिति से गुजर रहे हैं, जिसमें परंपरागत संस्कृति पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है और नयी भोगवादी संस्कृति संचार माध्यमों से गांव में प्रवेश करती जा रही है। गांव भारतीय संस्कृति के परंपरागत स्वरूप के आज भी प्रतीक बने हुए हैं। विविधताओं से भरे भारत देश के ग्रामीण परिवेश में व्याप्त समस्याएं और उनके निराकरण की चेतना देश के सभी क्षेत्रों ग्रामीण परिवेश मेंस्थित है जो ग्रामीण जीवन की विविधता में जटिलता की तरफ इशारा करती है।

*2015, RHIMRJ, All Rights Reserved*

*ISSN:* 2349-7637 (Online)

**संदर्भ**

1. डॉ. रामदरश मिश्र - हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा
2. डॉ. रामदरश मिश्र - हिंदी उपन्यास: एक सर्वेक्षण
3. डॉ.शिव प्रसाद सिंह - आधुनिक परिवेश और नव लेखन
4. डॉ. विवेकी राय - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य और ग्राम जीवन
5. डॉ. राही मासूम राजा - आधा गांव
6. डॉ. प्रतापपाल शर्मा - प्रसाद के उपन्यास
7. डॉ. ज्ञानचंद गुप्त- आंचलिक उपन्यास: अनुभव और दृष्टि
8. डॉ. नामवर सिंह- नई कहानी और एक शुरुआत
9. मैत्रेयी पुष्पा - चाक
10. सच्चिदानंद धूमकेतु -माटी की महक

*2015, RHIMRJ, All Rights Reserved*  *ISSN:* 2349-7637 (Online)